

प्रारंभिक परीक्षा

बिहार के गंगा के मैदानी इलाकों में जल में मौजूद मैंगनीज कैंसर का कारण बन रहा है

संदर्भ

हाल ही में वैज्ञानिकों की एक टीम ने दावा किया है कि बिहार के गंगा के मैदानी इलाकों में पानी में मैंगनीज(Mn) प्रदूषण के कारण कैंसर का खतरा बढ़ रहा है।

मैंगनीज (Mn) के बारे में -

- मैंगनीज पृथ्वी पर पांचवीं सबसे प्रचुर धातु है। यह ऑक्साइड, कार्बोनेट और सिलिकेट के रूप में मौजूद है।
- मैंगनीज प्रकृति में एक स्वतंत्र तत्व के रूप में नहीं पाया जाता है। यह अक्सर लोहे के साथ संयोजन में पाया जाता है।
- सबसे महत्वपूर्ण मैंगनीज अयस्क पायरोलुसाइट है।
- गुण:
 - मैंगनीज एक सिल्वर-ग्रे धातु है जो लोहे के समान होती है। यह लोहे से भी कठोर लेकिन बहुत भंगुर होता है।
 - यह रासायनिक रूप से प्रतिक्रियाशील है और ठंडे पानी में धीरे-धीरे विघटित होता है।
 - मैंगनीज हवा में धीरे-धीरे धूमिल हो जाता है और घुलनशील ऑक्सीजन युक्त पानी में लोहे की तरह ऑक्सीकरण (जंग) हो जाता है।
- मैंगनीज का उपयोग: स्टील मिश्र धातुओं के निर्माण के लिए मूल कच्चा माल, ब्लीचिंग पाउडर, कीटनाशकों, पेंट और बैटरी के निर्माण में उपयोग किया जाता है।
- जैविक महत्व:
 - एंजाइम सक्रियण में मदद करता है।
 - हड्डियों के निर्माण, कार्बोहाइड्रेट, अमीनो एसिड और कोलेस्ट्रॉल के चयापचय के लिए महत्वपूर्ण है।

मैंगनीज की विषाक्तता -

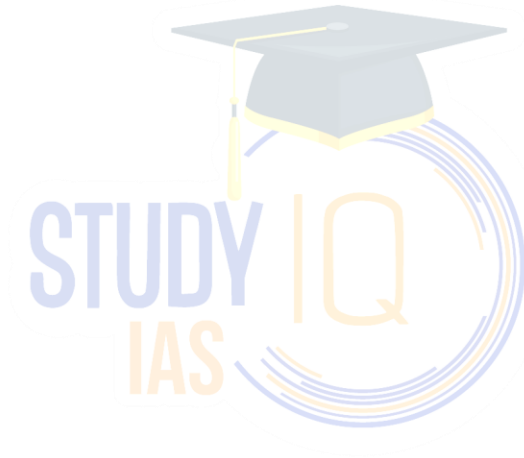
- थोड़ी मात्रा लाभदायक होती है, अधिक मात्रा में मैंगनीज विषाक्त हो सकता है।
- सम्पर्क /एक्सपोजर के स्रोत:
 - जल: उच्च Mn स्तर वाला भूजल (प्राकृतिक या औद्योगिक प्रदूषण)।
 - वायु: खनन, वेल्डिंग और इस्पात उत्पादन से औद्योगिक उत्सर्जन।
- मिट्टी और भोजन: भूजनिक (Geogenic) स्रोत या दूषित सिंचाई जल
- स्वास्थ्य पर प्रभाव:
 - तंत्रिका संबंधी: लंबे समय तक संपर्क में रहने से मैंगनिज्म(Manganism) हो सकता है, जो पार्किंसंस रोग के समान एक स्थिति है।
 - संज्ञानात्मक हानि: स्मृति की हानि, सीखने में कठिनाई।
 - कैंसर का खतरा: हाल के अध्ययनों से संकेत मिलता है कि लंबे समय तक Mn एक्सपोजर कार्सिनोजेनेसिस में योगदान दे सकता है (उदाहरण के लिए, जल प्रदूषण पर बिहार अध्ययन)।

तथ्य

- विश्व भर में शीर्ष भंडार: दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और चीन (भारत-7वां)
- भारत के शीर्ष भंडार: ओडिशा (44%), कर्नाटक (22%) और मध्य प्रदेश (12%)
- भारत के शीर्ष उत्पादक: मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और ओडिशा

स्रोत:

- [डाउन टू अर्थ - बिहार के गंगा के मैदानी इलाकों में पानी में मौजूद मैंगनीज कैंसर का कारण बन रहा है: अध्ययन](#)



जेनकास्ट / GenCast

संदर्भ

गूगल डीपमाइंड ने पहला आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस(AI) मॉडल विकसित किया है जो वर्तमान में उपयोग में आने वाली सर्वोत्तम प्रणाली की तुलना में अधिक सटीक रूप से मौसम का पूर्वानुमान लगा सकता है।

जेनकास्ट (GenCast) के बारे में -

- यह गूगल डीपमाइंड द्वारा विकसित एक नया एआई -आधारित मौसम पूर्वानुमान मॉडल है। यह 15 दिन पहले तक तेज़ और अधिक सटीक पूर्वानुमान प्रदान करता है।
- जेनकास्ट की मुख्य विशेषताएं:
 - संभाव्य समूह पूर्वानुमान:
 - पारंपरिक मॉडलों के विपरीत, जो एक ही सर्वोत्तम अनुमान देते हैं, जेनकास्ट अनेक संभावित मौसम परिदृश्य प्रदान करता है।
 - इससे उपयोगकर्ताओं को संभावित परिणामों की एक श्रृंखला और भविष्यवाणियों से जुड़ी अनिश्चितता को समझने में मदद मिलती है।
 - डेटा और प्रशिक्षण: जेनकास्ट को 40 वर्षों के ऐतिहासिक मौसम डेटा पर प्रशिक्षित किया गया, जिसमें तापमान, पवन की गति और वायुदाब जैसे चर शामिल थे।
 - मौसम के लिए जनरेटिव एआई:
 - जेनकास्ट कई मौसम की संभावनाओं को "जनरेट" करने के लिए जेनरेटिव एआई का उपयोग करता है, जेनरेटिव एआई, एक प्रकार का एआई है जिसका उपयोग आमतौर पर इमेज, वीडियो और संगीत बनाने के लिए किया जाता है।
 - रचनात्मक सामग्री तैयार करने के बजाय, मॉडल कल्पना करता है और भविष्यवाणी करता है कि समय के साथ मौसम कैसे विकसित हो सकता है।

स्रोत:

- [द हिंदू - नया एआई मॉडल 'जेनकास्ट' सर्वश्रेष्ठ पारंपरिक मौसम पूर्वानुमानों को मात दे सकता है](#)

स्विट्जरलैंड ने भारत के साथ कर बचाव समझौते में MFN खंड को निलंबित कर दिया

संदर्भ

स्विट्जरलैंड ने भारत के साथ दोहरे कराधान बचाव समझौते (DTAA) के अंतर्गत, मोस्ट-फेवर्ड-नेशन (MFN) खंड को 1 जनवरी, 2025 से निलंबित कर दिया है।

मोस्ट-फेवर्ड-नेशन (MFN) के संदर्भ में -

- मोस्ट-फेवर्ड-नेशन(MFN) व्यापार का एक सिद्धांत है, जिसके अंतर्गत देशों को विश्व व्यापार संगठन (WTO) के अन्य सभी सदस्यों के साथ समान व्यवहार करने की आवश्यकता होती है।
- कोई भी राष्ट्र अपने व्यापारिक साझेदारों के मध्य भेदभाव नहीं कर सकता है और उन्हें किसी एक देश के साथ किये गए किसी भी अनुकूल व्यवहार को, सभी अन्य WTO सदस्यों के साथ भी लागू करना चाहिए।
- छूट: विश्व व्यापार संगठन, MFN प्रावधानों से निम्नलिखित छूट प्रदान करता है -
 - व्यापार समूह: यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका-मेक्सिको-कनाडा समझौता (USMCA) जैसे व्यापार समूह, समूह के बाहर से आयात के संबंध में भेदभाव कर सकते हैं।
 - व्यापार बाधाएँ: देश, उन विशिष्ट देशों के उत्पादों के विरुद्ध अवरोध उत्पन्न कर सकते हैं, जिनके संबंध में यह माना जाता है कि, उनका व्यापार अनुचित तरीके से किया जा रहा है।
 - व्यापार प्राथमिकताएँ: देश, अन्य विकासशील देशों को व्यापार संबंधी प्राथमिकताएं दे सकते हैं।
 - मुक्त व्यापार समझौते: देश, मुक्त व्यापार समझौते स्थापित कर सकते हैं जो केवल समूह के भीतर व्यापार किए जाने वाली वस्तुओं पर लागू होते हैं।
- मोस्ट-फेवर्ड-नेशन (MFN) का दर्जा समाप्त करना:
 - मोस्ट-फेवर्ड-नेशन (MFN) के व्यवहार को निलंबित करने की कोई औपचारिक प्रक्रिया नहीं है और यह स्पष्ट नहीं है कि, ऐसा करने पर सदस्य विश्व व्यापार संगठन को सूचित करने के लिए बाध्य हैं अथवा नहीं।
 - उदाहरण के लिए- भारत ने 2019 में पुलवामा हमले के बाद पाकिस्तान का MFN का दर्जा समाप्त कर दिया। पाकिस्तान ने कभी भी भारत को MFN का दर्जा नहीं दिया है।

भारत-स्विट्जरलैंड कर संधि -

- भारत और स्विट्जरलैंड के मध्य दोहरे कराधान बचाव समझौते (DTAA) पर 1994 में हस्ताक्षर किए गए थे और आय पर दोहरे कराधान को रोकने के लिए 2010 में इसमें संशोधन किया गया था।

दोहरा कराधान बचाव समझौता, दो या दो से अधिक देशों के मध्य एक अंतरराष्ट्रीय संधि है, जिसका उद्देश्य एक ही आय पर दो बार कर लगाए जाने को प्रतिबंधित करना है। भारत ने लगभग 90 देशों के साथ ऐसे समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं, जिससे उन व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होता है, जो एक देश में निवास करते हैं, किन्तु दूसरे देश में आय अर्जित करते हैं।

- सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय:
 - 2023 में, सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय दिया कि, दोहरा कराधान बचाव समझौते के प्रावधानों को लागू करने के लिए, आयकर अधिनियम के अंतर्गत स्पष्ट अधिसूचना की आवश्यकता है।
 - इसने दिल्ली उच्च न्यायालय के उस निर्णय को पलट दिया, जिसमें संस्थाओं को दोहरे कराधान से सुरक्षा प्रदान की गई थी।
- MNF खंड के निलंबन के निहितार्थ:

○ उच्च कर दरें:

■ 1 जनवरी, 2025 के बाद भुगतान किए गए लाभांश पर, स्रोत राज्य में 10% की उच्च दर से कर लगाया जाएगा।

■ इससे नेस्ले जैसी स्विस् कंपनियाँ प्रभावित होंगी और निवेश गंतव्य के रूप में भारत के आकर्षण को चुनौती मिलेगी।

○ निवेश जोखिम:

■ कर के बढ़ते भार के कारण, भारत में स्विस् निवेश में गिरावट आ सकती है।

■ 15 वर्ष की अवधि में EFTA की \$100 बिलियन की निवेश प्रतिबद्धता जोखिम में पड़ सकती है।

यूरोपीय मुक्त व्यापार संगठन (EFTA) -

● यह 4 देशों- आइसलैंड, लिचेंस्टीन, नॉर्वे और स्विट्जरलैंड का एक समूह है।

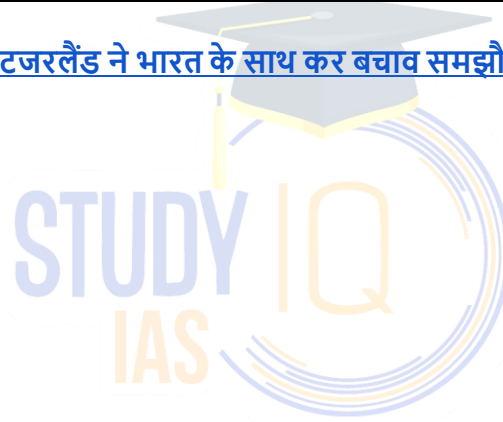
● स्थापना: 1960 में, स्टॉकहोम कन्वेंशन के माध्यम से।

● उद्देश्य: अपने सदस्यों के मध्य मुक्त व्यापार और आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देना।

● यूरोपीय संघ के साथ संबंध: EFTA, यूरोपीय संघ (EU) के साथ मिलकर कार्य करता है, जिसके सभी सदस्य यूरोपीय एकल बाजार और शेंगेन क्षेत्र में भाग लेते हैं, किन्तु EU सीमा शुल्क संघ में शामिल नहीं होते हैं।

स्रोत:

- [इंडियन एक्सप्रेस - स्विट्जरलैंड ने भारत के साथ कर बचाव समझौते में एमएफएन खंड को निलंबित कर दिया](#)



कैसे एक दूरस्थ आकाशगंगा ने अपनी प्रारंभिक अवस्था में मिल्की वे की झलक दिखाई

संदर्भ

नासा के जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप (JWST) ने "फायरफ्लाई स्पार्कल" नामक एक दूर की आकाशगंगा की खोज की है।

फायरफ्लाई स्पार्कल की मुख्य विशेषताएं -

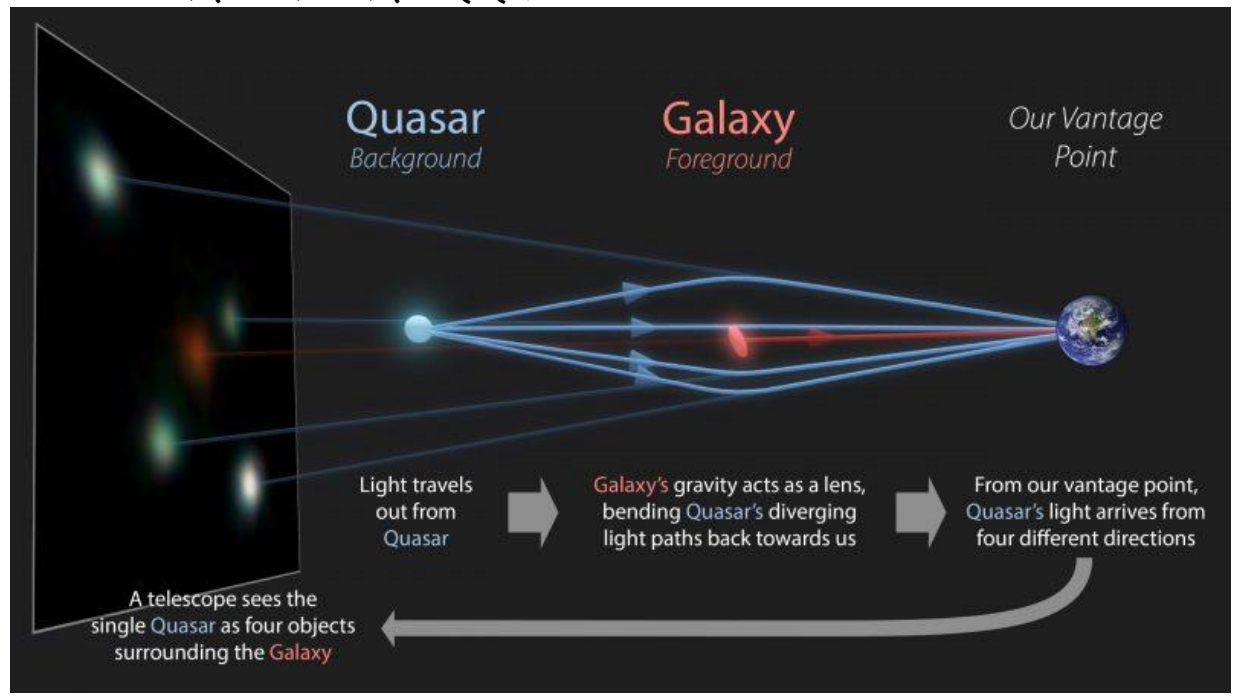
- **गठन:**
 - इस आकाशगंगा का निर्माण बिग बैंग के 100-400 मिलियन वर्ष बाद हुआ था।
 - इसकी वर्तमान अवलोकित अवस्था इसे एक नवजात आकाशगंगा के रूप में दर्शाती है, जो अभी भी एकत्रित होने की प्रक्रिया में है।
- **आकार और संरचना:**
 - **द्रव्यमान:** लगभग 10 मिलियन तारे, जो सूर्य के आकार के बराबर हैं।
 - **पड़ोसी आकाशगंगाएँ:** दो छोटी पड़ोसी आकाशगंगाएँ जिनके नाम हैं फायरफ्लाई-बेस्ट फ्रेंड और फायरफ्लाई-न्यू बेस्ट फ्रेंड।
- **आकाशगंगा से तुलना:** इस स्तर पर, फायरफ्लाई स्पार्कल वर्तमान आकाशगंगा से 10,000 गुना कम विशाल है।

खोज का महत्व

- **आकाशगंगा निर्माण में अंतर्दृष्टि:** फायरफ्लाई स्पार्कल इस बात पर प्रत्यक्ष नज़र डालता है कि मिल्की वे जैसी आकाशगंगाएँ अपने प्रारंभिक काल में कैसी दिखती होंगी। इसका द्रव्यमान और संरचना प्रारंभिक मिल्की वे जैसी आकाशगंगाओं के सैद्धांतिक मॉडल के अनुरूप है।
- **विकास को समझना:** फायरफ्लाई स्पार्कल आकाशगंगाओं की विकास प्रक्रिया में प्रारंभिक गठन चरण का प्रतिनिधित्व करता है।

गुरुत्वाकर्षण लेंसिंग(Gravitational Lensing) -

- गुरुत्वाकर्षण लेंसिंग एक ऐसी घटना है जो तब होती है जब एक विशाल आकाशीय पिंड झुकता है और अंतरिक्ष को विकृत करता है, जिससे प्रकाश मुड़ता है और बड़ा होता है।
- यह प्रभाव खगोलविदों को उन वस्तुओं का अवलोकन करने की अनुमति देता है जो अन्यथा बहुत धुंधली या दूर होतीं, तथा उनका पता लगाना कठिन होता।
- आइंस्टीन के सापेक्षता के सामान्य सिद्धांत में गुरुत्वाकर्षण को द्रव्यमानों के बीच बल के रूप में नहीं, बल्कि द्रव्यमान और ऊर्जा के कारण स्पेसटाइम की वक्रता के रूप में वर्णित किया गया है।
- **गुरुत्वाकर्षण लेंस:** प्रकाश को मोड़ने वाली विशाल वस्तुओं को गुरुत्वाकर्षण लेंस कहा जाता है। ये अलग-अलग तारे, आकाशगंगाएँ या आकाशगंगाओं के समूह हो सकते हैं।
- इस प्रभाव के बिना, उन्नत JWST भी अपने छोटे आकार और दूरी के कारण फायरफ्लाई स्पार्कल का निरीक्षण करने में सक्षम नहीं होता।



स्रोत:

- [इंडियन एक्सप्रेस - कैसे एक दूर स्थित आकाशगंगा ने अपनी प्रारंभिक अवस्था में मिल्की वे की झलक दिखाई](#)

दुर्गाडी किला

संदर्भ

हाल ही में कल्याण सिविल कोर्ट ने मजलिस-ए-मुशावरत ट्रस्ट के दावों को खारिज करते हुए फैसला सुनाया है कि दुर्गाडी किले का स्वामित्व महाराष्ट्र सरकार के पास है।

दुर्गाडी किले के बारे में -

- इसका निर्माण 16वीं शताब्दी में आदिल शाही सल्तनत (बीजापुर) के दौरान किया गया था और बाद में मराठों द्वारा इसमें संशोधन किया गया था।
- यह महाराष्ट्र के कल्याण में उल्हास नदी के पास स्थित है। इस समय कल्याण एक व्यापारिक बंदरगाह था।
- 1760 में, जब मराठों ने कल्याण पर कब्जा कर लिया, तो उन्होंने दुर्गादेवी को समर्पित एक लकड़ी का मंदिर बनवाया और इसका नाम बदलकर दुर्गाडी किला रख दिया।
- 1818 में अंग्रेजों के नियंत्रण में आने के बाद मंदिर बंद हो गया और 1876 तक देवी की प्रतिमा चोरी हो गयी।

स्रोत:

- [इंडियन एक्सप्रेस - कल्याण के दुर्गाडी किले पर विवाद](#)



व्हाइट हाउस ने मुस्लिम-विरोधी और अरब-विरोधी नफ़रत से निपटने की योजना का खुलासा किया

संदर्भ

हाल ही में व्हाइट हाउस ने **इस्लामोफोबिया** से निपटने के लिए पहली राष्ट्रीय रणनीति का अनावरण किया है, जिसमें मुसलमानों और अरब अमेरिकियों के खिलाफ नफरत, हिंसा, पूर्वाग्रह और भेदभाव को रोकने के लिए 100 से अधिक कार्यों की रूपरेखा दी गई है।

राष्ट्रीय रणनीति के बारे में -

- **मुख्य उद्देश्य और फोकस क्षेत्र:** रणनीति 4 मुख्य स्तंभों पर केंद्रित है:
 - **जागरूकता बढ़ाना:** मुस्लिम-विरोधी और अरब-विरोधी घृणा के बारे में सार्वजनिक समझ को बढ़ाना और अमेरिकी समाज में इन समुदायों के योगदान को मान्यता देना।
 - **सुरक्षा और संरक्षा सुनिश्चित करना:** कमजोर समुदायों की सुरक्षा के लिए लक्षित उपायों का क्रियान्वयन करना।
 - **भेदभाव को कम करना:** धार्मिक प्रथाओं के समायोजन को बढ़ावा देना और संघीय वित्त पोषित गतिविधियों में पूर्वाग्रहों को दूर करना।
 - **एकजुटता का निर्माण:** घृणा और भेदभाव का मुकाबला करने के लिए अंतर-समुदाय सहयोग को प्रोत्साहित करना।
- **प्रमुख उपाय और कार्यवाहियाँ:**
 - **डेटा संग्रह और शिक्षा:** घृणा अपराधों की निगरानी के लिए डेटा संग्रह में वृद्धि। इस्लामोफोबिया और अरब भेदभाव के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए शैक्षिक पहल की शुरुआत।
 - **घृणा अपराध रिपोर्टिंग:** घृणा अपराधों की रिपोर्टिंग में समुदायों को शामिल करने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं का प्रसार।

स्रोत:

- [इंडियन एक्सप्रेस - व्हाइट हाउस ने मुस्लिम-विरोधी और अरब-विरोधी नफरत से निपटने की योजना का खुलासा किया](#)

आर्कटिक में पहला बर्फ मुक्त दिन 2030 से पहले हो सकता है

संदर्भ

नेचर कम्युनिकेशंस में प्रकाशित एक नए अध्ययन में भविष्यवाणी की गई है कि आर्कटिक महासागर 2030 तक अपना पहला बर्फ-मुक्त दिन (1 मिलियन वर्ग किलोमीटर से कम समुद्री बर्फ) देख सकता है, या विशिष्ट परिस्थितियों में 2027 की शुरुआत में भी ऐसा हो सकता है।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष -

- समुद्री बर्फ की गिरावट दर:
 - पिछले 40 वर्षों में, आर्कटिक समुद्री बर्फ का विस्तार 12.6% प्रति दशक की दर से सिकुड़ रहा है, जो पिछले 1,500 वर्षों में एक अभूतपूर्व गिरावट है (एमआईटी जलवायु पोर्टल, 2023)।
- आर्कटिक वार्षिक में प्रमुख योगदानकर्ता:
 - खतरनाक GHG स्तर: 2023 में, कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड की वैश्विक सांद्रता रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गई (विश्व मौसम विज्ञान संगठन)।
 - आर्कटिक वार्षिक दर: आर्कटिक वैश्विक औसत से 4 गुना तेजी से गर्म हो रहा है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र, बुनियादी ढांचे और आजीविका को खतरा हो रहा है।

बर्फ रहित आर्कटिक के परिणाम -

- जलवायु परिवर्तन त्वरण:
 - एल्बेडो प्रभाव: परावर्तक समुद्री बर्फ के नुकसान से गहरे समुद्र की सतह द्वारा सौर ऊर्जा अवशोषण में वृद्धि होगी, जिससे आर्कटिक और अधिक गर्म हो जाएगा। इससे मध्य अक्षांशों में अधिक चरम मौसम की घटनाएं होंगी और वैश्विक तापमान में वृद्धि होगी।
- समुद्र का स्तर बढ़ना:
 - समुद्र स्तर में वृद्धि की स्थिति बदतर होती जा रही है: 1990 के दशक की तुलना में पिछले दशक में वैश्विक समुद्र स्तर 1.5 गुना तेजी से बढ़ा है।
 - ग्रीनलैंड बर्फ की चादर: पूर्ण रूप से पिघलने से समुद्र का स्तर 6 मीटर तक बढ़ सकता है, जिससे वैश्विक स्तर पर तटीय समुदायों को खतरा हो सकता है।
- पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता खतरे:
 - समुद्री बर्फ के नष्ट होने और पर्माफ्रॉस्ट के पिघलने से ध्रुवीय भालू, वालरस, आर्कटिक लोमड़ी, बर्फले उल्लू और बारहसिंगा जैसी प्रजातियां प्रभावित होंगी।
 - आर्कटिक समुदायों पर प्रभाव: स्वदेशी आर्कटिक लोगों की बुनियादी संरचना, आजीविका और पारंपरिक प्रथाएं गंभीर खतरे में हैं।

आर्कटिक -

- यह उत्तरी ध्रुव के चारों ओर फैला एक भौगोलिक क्षेत्र है।
- इसमें कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, फिनलैंड, स्वीडन, नॉर्वे, आइसलैंड और ग्रीनलैंड के उत्तरी भाग शामिल हैं।



स्रोत:

- [इंडियन एक्सप्रेस - नए अध्ययन के अनुसार आर्कटिक में पहला बर्फ-मुक्त दिन 2030 तक आ सकता है।](#)

समाचार संक्षेप में

एफ1 कारों में प्रयुक्त महत्वपूर्ण इंजीनियरिंग अवधारणाएँ

- **वायुगतिकी (Aerodynamics):**
 - वायुगतिकी वह अध्ययन है कि वस्तुओं, विशेषकर वाहनों के चारों ओर वायु किस प्रकार प्रवाहित होती है।
 - इसका ध्यान वायु प्रतिरोध (ड्रैग) को न्यूनतम करने तथा वाहन की स्थिरता और दक्षता को अधिकतम करने पर केंद्रित है।
 - इसका उपयोग ऐसे वाहनों को डिजाइन करने के लिए किया जाता है जो हवा में आसानी से चलते हैं, जिससे उन्हें आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक प्रयास कम हो जाता है और ईंधन दक्षता में सुधार होता है।
- **ब्रेक रीजनरेशन (काइनेटिक एनर्जी रिकवरी सिस्टम या KERS):**
 - यह एक ऐसी तकनीक है जो ब्रेक लगाने के दौरान नष्ट हुई गतिज ऊर्जा को पुनः प्राप्त कर उसे विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित करती है।
 - यह ऊर्जा बैटरी या संधारित्र में संग्रहित की जाती है और इसका उपयोग बाद में वाहन के प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है, विशेष रूप से त्वरण के लिए।

स्रोत:

- [इंडियन एक्सप्रेस - एफ1 ग्रिड से परे की सीख](#)

संपादकीय सारांश

ट्रम्प की वापसी और दक्षिण एशिया का दृष्टिकोण

संदर्भ

- जनवरी 2025 में डोनाल्ड ट्रम्प संयुक्त राज्य अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेंगे।
- उनके पद पर लौटने से विश्व स्तर पर जिज्ञासा और आशंका पैदा हो गई है, हालांकि दक्षिण एशिया में उनकी नीतियों से भारत के साथ सहयोग पर ध्यान केंद्रित करते हुए निरंतरता प्रदान करने की उम्मीद है।

अमेरिका-भारत संबंधों को आकार देने वाले कारक -

- **2000 से मजबूत प्रगति**
 - अमेरिका ने **2009 में भारत को शुद्ध-सुरक्षा प्रदाता के रूप में मान्यता दी थी।**

हिंद-प्रशांत क्षेत्र (IOR) में एक शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत: घटनाएँ

- 2014 में मालदीव को महत्वपूर्ण जल आपूर्ति
- लापता मलेशिया एयरलाइंस की उड़ान MH370 का पता लगाने के प्रयास।
- 2004 हिंद महासागर सुनामी के दौरान पड़ोसी देशों को मानवीय सहायता।
- 2024 में, भारतीय नौसेना ने हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में एक समुद्री डकैती की घटना में सफलतापूर्वक हस्तक्षेप किया और एक अपहृत मछली पकड़ने वाले जहाज के चालक दल को बचाया।

- बाइडेन प्रशासन (2021-24) के तहत, चीन की मुखरता के कारण संबंध मजबूत बने रहे।
- अमेरिका का लक्ष्य चीन का मुकाबला करने के लिए भारत के क्षेत्रीय नेतृत्व का समर्थन करना है।
- **सहयोग के प्रमुख उदाहरण**
 - नेपाल में मिलेनियम चैलेंज कॉर्पोरेशन (MCC) परियोजनाएं।
 - आर्थिक संकट के दौरान श्रीलंका की सहायता करना।
 - अफगानिस्तान से वापसी के बाद पाकिस्तान के साथ बाइडेन के सीमित जुड़ाव ने अमेरिका और भारत के बीच पारस्परिक रणनीतिक दृष्टि को सुविधाजनक बनाया।

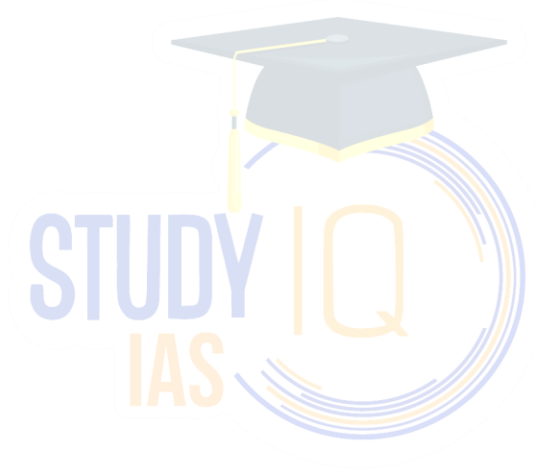
विचलन और चुनौतियाँ -

- लोकतंत्र और मानवाधिकारों पर अमेरिकी जांच से संबंध तनावपूर्ण हो गए, विशेष रूप से निम्नलिखित मामलों में:
 - **बांग्लादेश** (शेख हसीना सरकार)।
 - **म्यांमार** (सैन्य जुंटा)।
- रूस के साथ सहयोग करने वाली भारतीय कंपनियों के खिलाफ अमेरिकी प्रतिबंधों और अदानी समूह के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों ने श्रीलंका में भारतीय परियोजनाओं को प्रभावित किया।

भविष्य का दृष्टिकोण -

- ट्रम्प की विदेश नीति में मानव अधिकारों की चिंताओं की तुलना में रणनीतिक सहयोग को प्राथमिकता दी जा सकती है।
 - इससे भारत को घरेलू शासन के मुद्दों पर अमेरिका से अधिक दबाव का सामना किए बिना क्षेत्रीय नेतृत्व में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर मिलेगा।

स्रोत: द हिंदू: ट्रम्प की वापसी और दक्षिण एशिया का दृष्टिकोण



मूल्य संवर्धन(Value Addition)

रेलवे संशोधन विधेयक राष्ट्रीय ट्रांसपोर्टर को कैसे प्रभावित कर सकता है

संदर्भ

सरकार ने बुधवार (13 दिसंबर) को लोकसभा में रेलवे (संशोधन) विधेयक, 2024 पारित कर दिया।

यह विधेयक क्यों पेश किया गया?

- **कानूनी ढांचे को सरल बनाना:** भारतीय रेलवे बोर्ड अधिनियम, 1905, रेलवे अधिनियम, 1989 के साथ-साथ अस्तित्व में रहा, यहां तक कि रेलवे अधिनियम, 1890 को निरस्त करने के बाद भी।
 - नये विधेयक का उद्देश्य 1905 के अधिनियम के प्रावधानों को 1989 के अधिनियम में एकीकृत करना है, जिससे विधायी प्रक्रिया सुव्यवस्थित हो जाएगी और दो अलग-अलग कानूनों का संदर्भ लेने की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी।
- **दक्षता और आधुनिकीकरण:** सरकार का मानना है कि इन अधिनियमों के विलय से दक्षता में वृद्धि होगी और रेलवे नेटवर्क का विकास होगा, जिससे "आमूलचूल परिवर्तन" होगा।
 - इस विधेयक का उद्देश्य रेलवे में प्रशासन को आधुनिक और सरल बनाना है।
- **नौकरशाही की अतिरेकता को कम करना:** संशोधन का उद्देश्य भूमिकाओं के दोहराव को रोकना तथा रेलवे बोर्ड की शक्तियों और कार्यों को सुव्यवस्थित करना है।

विधेयक के प्रमुख प्रावधान -

- **रेलवे अधिनियम, 1989 की धारा 2 में संशोधन:** विधेयक में **अध्याय 1A** को शामिल किया गया है, जो रेलवे बोर्ड से संबंधित है।
 - यह विधेयक केन्द्र सरकार को रेलवे बोर्ड को रेलवे के प्रबंधन से संबंधित शक्तियां और कार्य प्रदान करने की अनुमति देता है।
- **रेलवे बोर्ड का अधिकार:** केन्द्र सरकार रेलवे अधिनियम, 1989 के अधीन अपनी कोई या सभी शक्तियां रेलवे बोर्ड को सौंप सकती है।
 - ये शक्तियां बिना शर्त अथवा विशिष्ट शर्तों के अधीन सौंपी जा सकती हैं।
- **नियुक्तियों की निरंतरता:** 1905 अधिनियम के तहत अध्यक्ष और सदस्यों की मौजूदा नियुक्तियों को अब संशोधित रेलवे अधिनियम, 1989 के तहत नियुक्तियां माना जाएगा।
 - विधेयक में किसी नए निकाय का गठन नहीं किया गया है; रेलवे बोर्ड यथावत बना रहेगा।
- **यात्रियों पर प्रभाव:** इस विधेयक से रेलवे बोर्ड की कार्यकुशलता में सुधार होने की उम्मीद है, जिससे रेलवे नेटवर्क का बेहतर विकास और संचालन संभव हो सकेगा।

विधेयक की आलोचनाएँ -

- **विकेंद्रीकरण का अभाव:** विधेयक में क्षेत्रीय और मंडल स्तर पर सत्ता के विकेंद्रीकरण के बारे में चिंताओं का समाधान नहीं किया गया है। कई सांसदों का तर्क है कि अधिक कुशल रेलवे संचालन के लिए इन स्तरों पर अधिक स्वायत्तता आवश्यक है।
- **स्वतंत्रता पर चिंताएं:** आलोचकों को डर है कि यह विधेयक रेलवे बोर्ड पर महत्वपूर्ण नियंत्रण केन्द्र सरकार के पास रखकर इसकी स्वतंत्र कार्यप्रणाली से समझौता करता है।
 - रेलवे बोर्ड को निर्णय लेने की शक्तियों सहित एक स्वायत्त निकाय बनाने की मांग की जा रही है।
- **सीमित विचार-विमर्श:** विधेयक को व्यापक परामर्श के लिए सर्वदलीय समिति गठित किए बिना ही प्रस्तुत किया गया, जिसके बारे में कुछ लोगों का मानना है कि इससे कानून की प्रभावशीलता में सुधार होता।

- **विशेषज्ञ सिफारिशों का बहिष्कार:** विधेयक कई विशेषज्ञ समितियों की सिफारिशों को शामिल करने में विफल रहा है, जैसे कि रेलवे के पुनर्गठन पर 2015 की समिति, जिसने रेलवे के लिए एक स्वतंत्र नियामक निकाय बनाने का सुझाव दिया था।
 - **सामाजिक समावेशन और योग्यता आधारित नियुक्तियाँ:** रेलवे बोर्ड में अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी), अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) और महिलाओं के प्रतिनिधित्व की आवश्यकता के संबंध में चिंताएं व्यक्त की गई हैं।
 - योग्यता और क्षेत्र विशेषज्ञता के आधार पर होनी चाहिए, न कि राजनीतिक संबद्धता के आधार पर।
 - **सुरक्षा एवं परिचालन संबंधी मुद्दे:** विधेयक में निम्नलिखित महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान नहीं किया गया है:
 - रेलवे सुरक्षा एवं दुर्घटना रोकथाम।
 - रेलवे कार्यबल में रिक्तियों को भरना।
 - तकनीकी उन्नयन और नौकरशाही अकुशलताएं।
 - **केंद्रीकृत नियंत्रण:** ऐसी आशंकाएं हैं कि यह विधेयक रेलवे परिचालन पर केंद्र के नियंत्रण को मजबूत करता है, तथा संभवतः संसदीय निगरानी को दरकिनार कर देता है।
- स्रोत:** [इंडियन एक्सप्रेस: रेलवे संशोधन विधेयक राष्ट्रीय ट्रांसपोर्टर को कैसे प्रभावित कर सकता है](#)

